एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 05 (मई, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

बटेर पालन के मुख्य लाभ और संभावना

*मनोज जाट, सुनिता कुमारी गुर्जर एवं डॉ. लोकेश गुप्ता
पशु उत्पादन विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: manojjat484@gmail.com

विकासशील देशों में जनसंख्या के आकार में घातीय वृद्धि से मानव आबादी लिए प्रोटीन की उपलब्धता को बनाए रखने के लिए पशु प्रोटीन की आपूर्ति मे एक समान मांग की आवश्यकता होती है । भारतीय अर्थव्यवस्था मे पशुधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लगभग 20.5 मिलियन लोग अपनी आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर हैं। पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन विभाग, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट (2022–23) के अनुसार, विशाल पशुधन संसाधनों वाला भारत, सकल घरेलू उत्पाद का 4.66 प्रतिशत और कुल कृषि सकल घरेलू उत्पाद का 30.38 प्रतिशत योगदान देता है। हालांकि, पोल्ट्री फार्मिंग में ज्यादातर चिकन, जापानी बटेर, बत्तख, टर्की और गीज को भारत में भोजन के लिए मांस या अंडे का उत्पादन करने के लिए शामिल किया जाता है।

बटेर छोटे पक्षी होते हैं जो व्यावसायिक रूप से अण्डे और मांस के लिए पाले जाते हैं। भारत में इन पक्षियों का व्यावसायिक पालन दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है क्योंकि अन्य पक्षियों की तुलना में बटेर पालन में निवेश और रख रखाव में बहुत कम खर्चा आता है। मुर्गी के अंडे की तुलना में बटेर के अंडे बहुत पौष्टिक होते हैं। अतः मनुष्य आहार को संतुलित करने के लिए बटेर का मांस व अंडे बहुत उपयोगी हैं। जापानी बटेर दुनिया में बहुत प्रसिद्ध है और बटेर की पहली व्यावसायिक खेती जापान में शुरू हुई थी और अब यह पूरी दुनिया में फैल गई है। बटेर पालन का मुख्य लाभ यह है कि इन पक्षियों को अन्य कुक्कुट पक्षियों व पशुपालन के साथ पाला जा सकता है जिससे किसानों की आमदनी बढ़ सकती है। भारत में जनसंख्या अधिक होने के कारण मांस की आवश्यकता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि बटेर पालन निकट भविष्य में कुक्कुट पालन की तरह ही लोकप्रिय होगा।

बटेर पालन के मुख्य लाभ व विषेशताएं

- बटेर पक्षियों को अन्य पक्षियों की तुलना मे कम जमीन की आवश्यकता होती है।
- बटेर की खेती को स्थापित करने के लिए कम निवेश की आवश्यकता होती है और श्रम लागत बहुत कम होती है।
- पक्षी फार्म खोलने के लिए एक दिन का भी लाया जा सकता है।
- एक वयस्क बटेर का वजन 150–200 ग्राम तक होता है और 10–15 ग्राम का अंडा देता है।
- अंडे की ऊपरी सतह सफेद से भूरे रंग धब्बेदार होती है।
- बटेर के अंडे में लगभग 40% पानी, 13% प्रोटीन, 1% कार्बोहाइड्रेट तथा 1% निज होते हैं।
- बटेर पक्षी 5–6 सप्ताह में मार्किट के लिए तैयार हो जाता है।
- 6–7 सप्ताह बाद बटेर अंडे देना शुरू कर देती है और 250–300 अंडे एक साल में देती है।
- बटेर पर खाने की लागत कम आती है।
- रोग कम लगते हैं। बटेर जल्दी से व्यस्क होते हैं इसलिए व्यवसाय में नुकसान का सवाल ही नहीं उठता।
- बटेर का मास ˙ चिकन की तुलना मे ज्यादा स्वादिष्ट होता है। मांस में वसा और कोलोस्ट्रोल कम होता है तथा रक्तचाप के रोगियों के लिए लाभदायक होता है।

बटेर की मुख्य नस्लें

अंडे के लिए– जापानी बटेर, अंग्रेजी व्हाइट बटेर।
मांस के लिए– व्हाइट ब्रेस्टेड बटेर (भारतीय), बोबीवेट बटेर (अमेरिकन)

बटेर पालन में आवास व्यवस्था

- **डीप लिटर सिस्टम :–** 6 बटेरो को लगभग एक वर्ग फीट में रखा जाता है और इन्हे पिंजरे में भी रखा जा सकता है ताकि शरीर का वजन जल्दी बढ़े
- **पिंजरा प्रणाली :–** पहले 2 हफ्तों के लिए 3 फीट 2.5 फीट × 1.5 फीट के पिंजरो का आकार लगभग 100 बटेर को समायोजित कर सकता है। 3 से 6 सप्ताह तक 4 फीट×2.5 फीट×1.5 फीट के पिंजरो का आकार में 50 बटेर आ सकती हैं। पिंजरा पालन प्रणाली में प्रत्येक इकाई की लंबाई लगभग 6 फीट और चौड़ाई 1 फीट होनी चाहिए। इसे 6 उप–इकाइयो मे विभाजित किया जाना चाहिए। यदि जगह की कमी है, तो पिंजरों को 5 स्तरों तक ऊँचा रखा जा सकता है। किसी भी पंक्ति में 4 पिंजरे तक हो सकते हैं। पिंजरे की तली में पक्षियों के मल को साफ करने

की अनुमति होनी चाहिए, इसके लिए पिंजरे के तल को हटाने योग्य लकड़ी की प्लेट के साथ तय किया जाना चाहिए। वाणिज्यिक बटेर पालन के लिए प्लास्टिक के पिंजरे सबसे सुविधाजनक हैं। प्रजनन के लिए पांच मादा पक्षियों के लिए एक नर रखा जाना चाहिए। सुनिश्चित करें कि अंदर हवा और प्रकाष की उचित व्यवस्था हो दाना रखने के लिए बर्तन लम्बे, छाटे और पक्षी के सामने होने चाहिए, जबकि पानी पक्षी के पीछे रखना चाहिए।

बटेर का रख रखाव

- बटेर के आवास में प्रकाश तथा हवा का उचित प्रबंध होना चाहिए।
- बूढ़े बटेरों को तथा रोग से ग्रसित बटेरों को स्वस्थ बटेरों से अलग रखें।
- बटेर फार्म पर पक्षियों, जानवरो और अनजान व्यक्ति को न आने दें।
- बटेर को सूर्य की सीधी रोशनी और सीधी हवा से बचाना चाहिए

बटेर का प्रजनन के दौरान देखभाल

नवजात चूजे का वजन लगभग 8 ग्राम का होता है और ये बहुत नाजुक होते है, इसलिए प्रकाश की व्यवस्था 24 घंटे अच्छी होनी चाहिए ताकि चूजे एक जगह रुके रहे और जल्दी बढ़ सके इसलिए वहाँ का तापमान 950 (फरिनहाइट) तक रहना चाहिए

पहले दो सप्ताह में इनके पालन के लिए 24 घंटे रोशनी, उचित तापमान, बंद कमरा, दाना और पानी इत्यादि का उचित प्रबंध होना चाहिए।

- तीसर`सप्ताह मे यह बिकने लायक तैयार हो जाते है।
- नर और मादा बटेर को चार सप्ताह की उम्र में अलग कर देना चाहिए।
- 7–8 सप्ताह में बटेर अंडा उत्पादन शुरू कर देती है।
- 500 मादा बटेर लगभग 1500 बटेर चूजे प्रति सप्ताह देती है।

आहार व्यवस्था

बटेर के नवजात चूजों के अच्छी शारीरिक वृद्धि के लिए 6–8 प्रतिशत शीरे का घोल 3–4 दिन लगातार देना चाहिए तथा 0–3 सप्ताह इसकी मात्रा 25 प्रतिशत होनी चाहिए। 4–5 सप्ताह में 20 प्रतिशत प्रोटीन युक्त आहार देना चाहिए । आहार में मक्का – 45 प्रतिशत, टूटा चावल – 15 प्रतिशत, मूंगफली खल और सोयावीन खल – 15 प्रतिशत, मछली का चूरा – 10 प्रतिशत खनिज लवण, विटामिन्स एवं कैल्शियम भी होनी चाहिए। बटेर आहार में 5 प्रतिशत केजीन मिलाने से बटेरों की मृत्युदर कम हो जाती है और शारीरिक वृद्धि अच्छी होती है।

आहार घटक	0–3 सप्ताह	4–6 सप्ताह
मक्का दाना	27	–
ज्वार	15	14
टूटा चावल	8	–
मूंगफली खल	17	–
सूरजमुखी खल	12.5	2.5
सोयावीन	8	–
मछली चूरा	10	10
खनिज मिश्रण	2.5	2.5

आहार पूर्ण रूप से छोटे साइज का होना चाहिए। 5 सप्ताह का बटेर लगभग 500 ग्राम आहार लेता है, 6 महीने का बटेर 30–35 ग्राम प्रतिदिन खाता है और 12 अंडे देने वाली बटेर 400 ग्राम आहार खाती है। बटेर के अंडे छोटे होने के कारण सस्ते बिक जाते हैं और सभी आय वर्ग के लोग खरीद सकते है इसलिए इनके अंडे और मांस के लिए बाजार पहले से ही मिल जाता है। अतः बटेर पालन से बेरोजगार युवा तथा नौकरी पेशे वाले लोग भी अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं।

बटेर का विपणन/मार्केटिंग

बटेर के विपणन के बारे मे चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इन पक्षियों की स्थानीय बाजार में मांग है। इन्हें विशेष रूप से स्थानीय बाजार में बहुत आसानी और तेजी से बेचा जा सकता है। हालांकि, बटेर की खेती शुरू करने से पहले उचित मार्केटिंग रणनीति की आवश्यकता होती हैं।

संभावनाएं

- बटेर बहुत छोटा पक्षी है। परिपक्व नर और मादा लगभग 140 और 200 ग्राम होते हैं। जापानी बटेर पालन में अपार संभावनाएं हैं, और विशेष रूप से लाभकारी रोजगार, पूरक आय और मांस और अंडे के मूल्यवान स्रोत के रूप में मुर्गी पालन का विकल्प हो सकता है
- बटेर तुलनात्मक रूप से मुर्गियों की तुलना में संक्रामक रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होते हैं, जैसे साल्मोनेला, आंत्र दस्त, और निमोनिया आदि। इसलिए, बटेरों को कोई टीकाकरण नहीं दिया जाता है। जो भी दवा दी जाती है उसे पीने के पानी के माध्यम से पिलाया जाता है प्रवृति अन्य कुक्कुट प्रजातियों की तुलना में उच्च होती है।
- बटेर चूजे 8–10 ग्राम के आकार में बहुत छोटे होते हैं और मृत्यु दर बहुत अधिक होती है। पर्याप्त तापमान की अनुपस्थिति और तेज गति वाली ठंडी हवाओं के संपर्क में आने से वायु समूह एकत्रित हो जाते है, जिसके परिणामस्वरूप उच्च मृत्यु दर होती है।

बटेर पालन के लिए लाइसेंस की आवश्यकता

भारत में बटेर पालन व्यवसाय शुरू करने से पहले आपको सरकारी लाइसेंस प्राप्त करना होगा क्योंकि बटेर संरक्षित प्रजाति है। पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन विभाग लाइसेंस जारी करने के लिए जिम्मेदार हैं। लाइसेंस प्राप्त करने की एक निश्चित प्रक्रिया होती है। पूरी जानकारी के लिए कृपया अपने स्थानीय जिला पशुपालन विभाग अधिकारी से संपर्क करें ।

निष्कर्ष

लाभप्रद व्यवसाय, अतिरिक्त राजस्व और मांस और अंडे के मूल्यवान स्रोत के रूप में मुर्गी पालन के विकल्प के रूप में जापानी बटेर की व्यापक संभावनाओं को स्वीकार करते हुए, भारत में बटेर की खेती को प्रोत्साहित और बढ़ावा दिया जाना चाहिए। भारत में वाणिज्यिक बटेर की खेती अच्छी आय और रोजगार के अवसर का बड़ा स्रोत हो सकती है। आर्थिक महत्व के साथ–साथ बटेर की खेती भी बहुत आनंददायक और मनोरंजक है। बटेर बहुत छोटे आकार के कुक्कुट पक्षी होते हैं, और इनका पालन–पोषण बहुत आसान और सरल होता है। बटेर मांस और अंडे के व्यावसायिक उत्पादन के लिए बहुत उपयुक्त है और वाणिज्यिक बटेर पालन व्यवसाय किसी भी अन्य पोल्ट्री व्यवसाय की तुलना में अधिकलाभदायक है। बटेर लगभग सभी प्रकार की जलवायु और पर्यावरण के साथ खुद को अपना सकते हैं, और भारतीय जलवायु व्यावसायिक रूप से बटेर पालन के लिए बहुत उपयुक्त है।